पाठ 7

बस की यात्रा

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हममें से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा ''यह बस चलती भी है?'' वह बोले– ''चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।'' हमने कहा ''वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?'' गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है। हम आगा–पीछा करने लगे। डॉक्टर मित्र ने कहा ''डरो मत चलो । नई–नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।''

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं ''आना–जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।''

इंजन सममुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गाँधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था।

पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता, सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ–दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट में हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह–बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टेयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे–भरे पेड़ थे। जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह–तरह की तरकीबें की, पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे – ''बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।''

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी। धीरे–धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती– ''निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।''

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते ''वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।''

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी–मज़ाक चालू हो गया।

– हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ

वृद्धावस्था	–	बुढ़ापा	हाज़िर	–	उपस्थित
इत्तफ़ाक	–	संयोग	मंजिल	–	लक्ष्य
उत्सर्ग	–	बलिदान	क्षीण	–	कमजोर
ग्लानि	–	मानसिक शिथिलता, दुःख, खेद	रफ़्तार	–	गति
श्रद्धा	–	आदरपूर्ण आस्था या विश्वास	सफ़र	–	यात्रा
बियाबान	–	सुनसान जंगल	प्रयाण	–	प्रस्थान ,जाना

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. लेखक व उसके मित्र ने क्या तय किया?
2. लोगों ने बस के लिए क्या सलाह दी?
3. लेखक व उसके मित्र सुबह घर क्यों पहुँचना चाहते थे?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. समझदार आदमी के शाम वाली बस से सफ़र नहीं करने की वजह थी–

(क) खराब रास्ता (ख) डाकुओं का आतंक

(ग) अधिक किराया (घ) खटारा बस ( )

2. बस को देखने पर लेखक के मन में भाव उमड़ा –

(क) दया का (ख) श्रद्धा का (ग) प्रेम का (घ) घृणा का ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बस कैसी थी?
2. बस के काँचों की क्या हालत थी?
3. रवाना होने के बाद बस पहली बार क्यों रुकी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक व उसके मित्रों को छोड़ने आने वालों के चेहरे पर कौनसे भाव थे?
2. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धा भाव से देखा।" लेखक के मन में यह भाव क्यों जगा?
3. लेखक को ऐसा क्यों लगा जैसे सारी बस ही इंजन है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक रास्ते में आने वाले पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?
2. 'गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।" लेखक को बस के अपने आप चलने पर हैरानी क्यों हुई?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए –

   अवज्ञा, इत्मीनान, क्रांतिकारी, हिस्सेदार, प्रयाण

2. 'आया है, सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर' एक लोकोक्ति है। हम आपसी बातचीत में अक्सर ऐसी लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। शिक्षक/शिक्षिका की मदद से ऐसी कुछ लोकोक्तियों को कॉपी में लिखकर उनके अर्थ जानिए।
3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए –

   (क) आगे–पीछे करना (ख) जान हथेली पर रखना
4. श्रद्धा शब्द का वर्तनी विश्लेषण – श्+र्+अ+द्+ध्+आ है। आप भी निम्नलिखित शब्दों का वर्तनी विश्लेषण कर लिखिए–

   क्षीण प्रयाण उत्सर्ग वृद्धावस्था

पाठ से आगे

1. सविनय अवज्ञा व असहयोग आंदोलन के नेतृत्वकर्ता कौन थे? इन आंदोलनों का क्या उद्देश्य था?
2. आपके पास भी किसी यात्रा के खट्टे–मीठे अनुभव होंगे। अपने अनुभवों को लिखिए।

यह भी करें

1. हरिशंकर परसाई हिंदी के नामी व्यंग्यकार हुए हैं। उन्होंने व्यंग्य विधा को अपनी सशक्त रचनाओं से समृद्ध किया। पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों से परसाई जी की अन्य रचनाओं को पढ़िए।
2. कल्पना कीजिए यदि बस जीवित प्राणी होती, बोल सकती तो अपनी बुरी हालत व कष्टों को किन शब्दों में प्रकट करती?
3. यातायात के कई साधन होते हैं, जैसे–बस, रेल, वायुयान, जलयान। आपने कौन–कौनसे साधनों का उपयोग किया है? लिखिए।

यह भी जानें

बढ़ती सड़क दुर्घटनाएँ व वाहनों से पर्यावरण प्रदूषण हम सबके लिए बड़ी चिंता का विषय है। वाहनों से प्रदूषण को रोकने के लिए नियमित 'प्रदूषण जाँच' करवानी चाहिए। व्यक्तिगत रूप से निजी वाहनों की जगह सरकारी परिवहन सेवाओं के उपयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। साइकिल जैसे प्रदूषण रहित साधनों का उपयोग भी पर्यावरण संरक्षण में मदद का एक कदम हो सकता है।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

Time is Tide, wait for none.

समय एक प्रवाह है, जो किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।